Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

मलिन बस्ती के उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण का तुलनात्मक अध्ययन

Smt. Ambika Singh[1]* Dr. Rashmi Gore[2]

[1] Research Fellow, Education Department, Chatrapati Sahuji Maharaj University, Kanpur - 208024

[2] Assistant Professor, Education Department, Chatrapati Sahuji Maharaj University, Kanpur - 208024

सारांश - ***प्रस्तुत शोध पत्र में मलिन बस्ती के उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण का अध्ययन किया गया। जिसमें परिणामस्वरूप पाया गया कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण में अन्तर है। जिससे स्पष्ट है कि शैक्षिक प्रगति का आधुनिकीकरण में प्रभाव पड़ता है, लेकिन आधुनिकीकरण के आयाम शिक्षा, अभिभावक-बच्चों के सम्बन्ध, राजनीति, धर्म तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक तथ्यों के आकड़ो में अन्तर तो है लेकिन अन्तर सार्थक नही पाया गया जबकि महिलाओं की स्थिति एवं विवाह आयाम में उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आकड़ों में सार्थक अन्तर पाया गया। जिससे स्पष्ट है कि शैक्षिक प्रगति का प्रभाव बालकों के आधुनिक विचारों पर पड़ता है।***

मुख्य शब्द- मलिन बस्ती, शैक्षिक प्रगति (उच्च एवं निम्न) एवं आधुनिकीकरण।

----------X----------

प्रस्तावना

मलिन बस्तियां आज समाज का अभिन्न अंग बन गयीं हैं। औद्योगिक क्रान्ति मलिन बस्तियों की जनसंख्या बढ़ाने में महत्व पूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारत के प्रमुख औद्योगिक नगर जैसे-गुजरात, महाराष्ट्र, कलकत्ता, चेन्नई एवं तमिलनाडु में मलिन बस्तियों की 50 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। मलिन बस्तियों की जनसंख्या में लगातार वृद्धि होती जा रही है। रोजगार एवं जीविका की तलाश में गावों की आबादी तेजी से शहरों की ओर पलायन कर रही है। नतीजन शहरी जीवन प्रदूषण, गंदगी, जाम जैसी समस्यायों से बदरंग होता जा रहा है। गाँव उजाड़ हो रहे है, और शहरों में इंसानी भीड़ बढ़ती जा रही है। भारत माता ग्रामवासिनी से शहरवासिनी होती जा रही है (प्रदीप सिहं 2013)। चैधरी आदि (2014) ने पकिस्तान के लाहौर नगर की मलिन बस्तियों की जीवन शैली पर अध्ययन किया, जिसमें शिक्षा, पानी, स्वच्छता, बिजली आदि मूलभूत अवश्यकताओं की कमी पायी गयी। वर्तमान समय में सरकार एवं स्वयं सेवी संस्थाये मलिन बस्तियों के विकास के किये प्रयास किये जा रहे है। जिससे वे भी आधुनिक जीवन शैली को अपना सके। परम्परागत धारणाओं के स्थान पर आधुनिक एवं नवीन ज्ञान का विकास हो सके।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व-

मलिन बस्तियों की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही हैं। यद्यपि यहाँ का वातावरण स्वास्थ्यकर नही होता है। इसलिये सरकार तथा स्वयं सेवी संस्थायें इन बस्तियों के विकास के लिये कार्य कर रही है, जिससे उनका समुचित हो सके। शिक्षा सबको प्राप्त हो यह सुनिश्चित किया जा रहा है। निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा, छात्रवृत्ति आदि प्रदान की जा रही है। सरकारी आवास, शुद्ध पानी, बिजली, सड़क, विद्यालय, निशुल्क खाना, पढ़ाई की सामग्री तथा यूनीफार्म आदि की व्यवस्था की जा रही है। स्वरोजगार के लिये लोन तथा अनेक निशुल्क प्रशिक्षण संस्थान खोले जा रहे है। जिससे रोजगार प्राप्त कर सके और लोगो के जीवन स्तर में सुधार हो सके। मलिन बस्तियों के बालकों पर शिक्षा का क्या प्रभाव पड़ रहा हैं ? इस बात का मूल्यांकन किए जाने की आवश्यकता हैं।

समस्या कथन

"मलिन बस्ती में रहने वाले उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण का तुलनात्मक अध्ययन"।

www.ignited.in

प्रस्तुत शोध में चरों का संक्रियात्मक परिभाषीकरण

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त चरों को निम्न प्रकार परिभाषित किया गया है-

स्वतन्त्र चर- मलिन बस्ती

प्रस्तुत शोध में मलिन बस्ती से तात्पर्य कानपुर नगर में बसे उस स्थान से है जो अस्थायी, सघन और अवैध ढ़ग से बसी हुई कम से कम बीस घरो की बस्ती से है, जहाँ पर अस्वास्थ्यकर स्थितियाँ है तथा पर्याप्त हवा, रोशनी, स्वच्छता और पेयजल आदि सुविधाओं का अभाव है।

शैक्षिक प्रगति

प्रस्तावित शोध में मलिन बस्ती के कक्षा नौ (9) में अध्ययनरत बालकों की शैक्षिक प्रगति जानने के लिये उनके कक्षा आठ (8) के अंकपत्र को आधार माना है। साठ (60) प्रतिशत या इससे अधिक अंक पाने वाले बालकों को उच्च शैक्षिक प्रगति समूह में तथा तैतीस (33) प्रतिशत से पचास (50) प्रतिशत तक अंक पाने वाले बालकों को निम्न शैक्षिक प्रगति समूह में रखा गया है।

आश्रित चर- आधुनिकीकरण

आधुनिकीकरण से तात्पर्य ऐसे मानसिक एवं सामाजिक परिवर्तन से है जिसमें व्यक्ति वैज्ञानिक एवं तार्किक मार्ग को अपनाते हुये समाज के प्रति नवीन दृष्टिकोण रखता है एवं परम्पराओं के स्थान पर विकास को महत्व देता है।

परिसीमांकन

प्रस्तुत शोध उत्तर प्रदेश के कानपुर नगर की मलिन बस्तियों के कक्षा नौ में अध्ययनरत उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों तक परिसीमित है।

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य

1. मलिन बस्ती के उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण का तुलनात्मक अध्ययन।
2. मलिन बस्ती के उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण के आयाम शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन।
3. मलिन बस्ती के उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण के आयाम अभिभावक-बच्चों के सम्बन्ध का तुलनात्मक अध्ययन।
4. मलिन बस्ती के उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण के आयाम राजनीति का तुलनात्मक अध्ययन।
5. मलिन बस्ती के उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण के आयाम औरतों के स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन।
6. मलिन बस्ती के उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण के आयाम शादी का तुलनात्मक अध्ययन।
7. मलिन बस्ती के उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण के आयाम धर्म का तुलनात्मक अध्ययन।
8. मलिन बस्ती के उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण के आयाम सामाजिक-सांस्कृतिक तथ्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

प्रस्तुत शोध की शून्य परिकल्पनायें

H_{01}. मलिन बस्ती के उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण में सार्थक अन्तर नही है।

H_{02} .मलिन बस्ती के उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण के आयाम शिक्षा में सार्थक अन्तर नही है।

H_{03} .मलिन बस्ती के उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण के आयाम अभिभावक-बच्चों के सम्बन्ध में सार्थक अन्तर नही है।

H_{04} .मलिन बस्ती के उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण के आयाम राजनीति में सार्थक अन्तर नही है।

H_{05} .मलिन बस्ती के उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण के आयाम महिलाओ की स्थिति में सार्थक अन्तर नही है।

www.ignited.in

H_{06} .मलिन बस्ती के उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण के आयाम विवाह में सार्थक अन्तर नही है।

H_{07} .मलिन बस्ती के उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण के आयाम धर्म में सार्थक अन्तर नही है।

H_{08} .मलिन बस्ती के उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण के आयाम सामाजिक-सास्ंकृतिक तथ्यों में सार्थक अन्तर नही है।

शोध अध्ययन की शोध विधि (METHODOLOGY OF PRESENT RESEARCH WORK)

प्रस्तुत शोध अध्ययन स्वरूप के अनुसार परिमाणात्मक शोध (Quantitative research) है। शोध की प्रकृति के आधार पर वर्णानात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध की जनसंख्या के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश के कानपुर नगर की मलिन बस्तियों में निवास करने वाले कक्षा नौ में अध्ययनरत उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों (कक्षा आठ में 60 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले बालक उच्च शैक्षिक प्रगति के तथा 33 प्रतिशत से 50 प्रतिशत तक अंक पाने वाले निम्न शैक्षिक प्रगति के बालको) को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध के न्यादर्श का प्रारूप निम्न प्रकार का है-

न्यादर्श अभिकल्प

मलिन बस्ती के उच्च शैक्षिक प्रगति वाले बालक	100
मलिन बस्ती के निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालक	100
योग	200

न्यादर्शन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में कानपुर नगर विकास प्राधिकरण से प्राप्त मलिन बस्तियों की सूची जिसमें 410 मलिन बस्तियों के क्षेत्र थे। जिसे क्षेत्र के अनुसार पांच भागों में (पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण एवं मध्य) विभाजित कर प्रत्येक क्षेत्र से दैव निदर्शन विधि द्वारा दो क्षेत्रों का चयन कर उद्देश्यपूर्ण न्यादर्शन विधि द्वारा 100 उच्च शैक्षिक प्रगति एवं 100 निम्न शैक्षिक प्रगति के बालकों का चयन किया गया।

प्रदत्त संकलन उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आधुनिकीकरण के प्रदत्तों के संकलन के लिये डॉ एस0 पी0 अहलूवालिया एवं डॉ ए0 के0 कालिया द्वारा निर्मित 'कम्प्रेहेन्सिव मार्डनाईजेशन इनवेन्टरी' (संशोधित 2010) प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति मापक मापनी

कक्षा आठ (8) के प्राप्ताकों के प्रतिशत के आधार पर बालकों के उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति का निर्धारण किया गया है।

प्रदत्त संकलन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मलिन बस्ती मे रहने वाले बालकों की शैक्षिक प्रगति ज्ञात करने के लिये कक्षा आठ की परीक्षा के प्राप्तांक द्वितीयक आकड़ों के रूप में एवं आधुनिकीकरण चर के मापन के लिए मानकीकृत कम्प्रहेन्सिव मार्डनाईजेशन इनवेन्टरी (हिन्दी) परीक्षण द्वारा प्राथमिक आँकड़े प्राप्त किये गये।

सांख्यकीय प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राप्तांकों की प्रसामान्यता, नार्मल कर्व, कुकुदता, विषमता तथा समरूपता का परीक्षण करने के पश्चात् आंकडो के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात (टी-परीक्षण) ज्ञात किया गया जिसके लिये SPSS IBM 20 Software का प्रयोग किया गया।

www.ignited.in

परिकल्पनाओं का विश्लेषण

सारणी 1

मलिन बस्ती के उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण एवं उनके आयामों से प्राप्त मध्यमान (Mean), मानक विचलन (S.D.), क्रान्तिक अनुपात (C.R.) परीक्षण मान के परिणामों का सारांश

क्रम संख्या	आधुनिकीकरण के आयाम	सांख्यिकीय गणनायें	उच्च शैक्षिक प्रगति वाले बालक (N=100)	निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालक(N=100)
1	आधुनिकीकरण	मध्यमान (Mean)	170.76	164.57
		मानक विचलन (S.D.)	12.79	12.38
		क्रान्तिक अनुपात (C.R.)	3.47*	
2	आधुनिकीकरण के आयाम-शिक्षा	मध्यमान (Mean)	24.24	23.53
		मानक विचलन (S.D.)	3.18	2.92
		क्रान्तिक अनुपात (C.R.)	1.64	
3	आधुनिकीकरण के आयाम-अभिभावक-बच्चों के सम्बन्ध	मध्यमान (Mean)	24.21	24.03
		मानक विचलन (S.D.)	2.96	3.29
		क्रान्तिक अनुपात (C.R.)	.406	
4	आधुनिकीकरण के आयाम-राजनीति	मध्यमान (Mean)	25.47	25.36
		मानक विचलन (S.D.)	3.71	3.60
		क्रान्तिक अनुपात (C.R.)	.213	
5	आधुनिकीकरण के आयाम-महिलाओं की स्थिति	मध्यमान (Mean)	24.36	22.47
		मानक विचलन (S.D.)	3.34	3.99
		क्रान्तिक अनुपात (C.R.)	3.63*	
6	आधुनिकीकरण के आयाम-विवाह	मध्यमान (Mean)	24.14	22.30
		मानक विचलन (S.D.)	2.49	3.39
		क्रान्तिक अनुपात (C.R.)	4.37*	
7	आधुनिकीकरण के आयाम-धर्म	मध्यमान (Mean)	24.75	23.74
		मानक विचलन (S.D.)	3.78	4.24
		क्रान्तिक अनुपात (C.R.)	1.77	
8	आधुनिकीकरण के आयाम-सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थायें	मध्यमान (Mean)	23.80	23.49
		मानक विचलन (S.D.)	3.12	3.49
		क्रान्तिक अनुपात (C.R.)	.662	

*0.05 स्तर पर सार्थक

परिणामों की व्याख्या

1. सारणी 1 के क्रमांक संख्या 1 में प्राप्त t का मान 3.47 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक न्यूनतम तालिका मान कत्रि198 के लिये 1.97 से अधिक है, इसलिये हमारी शून्य परिकल्पना 1 मलिन बस्ती के उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण में सार्थक अन्तर नही है, अस्वीकार की जाती है।

2. सारणी 1 क्रमांक संख्या 2 में प्राप्त t का मान त्र 1.64 का मान 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक न्यूनतम तालिका मान कत्रि 198 के लिये 1.97 से कम है, इसलिये यह सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। स्पष्टतः दोनो मध्यमानों के बीच का अवलोकित अन्तर 0.05 स्तर पर सार्थक नही है, अतः शून्य परिकल्पना कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण के आयाम शिक्षा के फलांकों में सार्थक अन्तर नही है, निरस्त नही की जा सकती है।

3. सारणी 1 क्रमांक संख्या 3 में प्राप्त t का मान= .406 का मान 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक न्यूनतम तालिका मान कत्रि 198 के लिये 1.97 से कम है, इसलिये यह सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। स्पष्टतः दोनो मध्यमानों के बीच का अवलोकित अन्तर 0.05 स्तर पर सार्थक नही है, अतः शून्य परिकल्पना कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण के आयाम अभिभावक-बच्चों के सम्बन्ध के फलांकों में सार्थक अन्तर नही है, स्वीकार की जाती है।

4. सारणी 1 के क्रमांक संख्या 4 में प्राप्त t का मान = .213 का मान 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक न्यूनतम तालिका मान कत्रि 198 के लिये 1.97 से कम बहुत कम है, इसलिये यह सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। स्पष्टतः दोनो मध्यमानों के बीच का अवलोकित अन्तर 0.05 स्तर पर सार्थक नही है, अतः शून्य परिकल्पना कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण के आयाम राजनीति के फलांकों में सार्थक अन्तर नही है, निरस्त नही की जा सकती है।

5. सारणी 1 के क्रमांक संख्या 5 में प्राप्त t का मान त्र 3.63 का मान 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक न्यूनतम तालिका मान कत्रि 198 के लिये 1.97 से अधिक है, इसलिये यह सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक है। स्पष्टतः दोनो मध्यमानों के बीच का अवलोकित अन्तर 0.05 स्तर पर सार्थक है, अतः शून्य परिकल्पना कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण के आयाम महिलाओं की स्थिति के फलांकों में सार्थक अन्तर नही है, निरस्त की जाती है।

6. सारणी 1 के क्रमांक संख्या 6 में प्राप्त t का मान = 4.37 का मान 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक न्यूनतम तालिका मान क df= 198 के लिये 1.97 से अधिक है, इसलिये यह सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक है। स्पष्टतः दोनो मध्यमानों के बीच का अवलोकित अन्तर 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले बालकों के

www.ignited.in

आधुनिकीकरण के आयाम विवाह के फलांकों में सार्थक अन्तर नही है, निरस्त की जाती है।

7. सारणी 1 के क्रमांक संख्या 7 में प्राप्त t का मान त्र 1.77 का मान 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक न्यूनतम तालिका मान कत्रि 198 के लिये 1.97 से कम है, इसलिये यह सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। स्पष्टतः दोनो मध्यमानों के बीच का अवलोकित अन्तर 0.05 स्तर पर सार्थक नही है, अतः शून्य परिकल्पना कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण के आयाम धर्म के फलांकों में सार्थक अन्तर नही है, स्वीकार की जाती है।

8. सारणी 1 के क्रमांक संख्या 8 में प्राप्त t का मान = .662 का मान 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक न्यूनतम तालिका मान कत्रि 198 के लिये 1.97 से कम है, इसलिये यह सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नही है। स्पष्टतः दोनो मध्यमानों के बीच का अवलोकित अन्तर 0.05 स्तर पर सार्थक नही है, अतः शून्य परिकल्पना कि उच्च एवं निम्न शैक्षिक प्रगति वाले बालकों के आधुनिकीकरण के आयाम सामाजिक-सांस्कृतिक तथ्यों के फलांकों में सार्थक अन्तर नही है, स्वीकार की जाती है।

शैक्षिक निहितार्थ

मलिन बस्ती के बालकों के आधुनिकीकरण के विभिन्न आयामों शिक्षा, अभिभावक-बच्चों के सम्बन्ध, राजनीति, महिलाओं की स्थिति, शादी, धर्म एवं सामाजिक-सांस्कृतिक तथ्यों के विकास के लिये उन्हें उचित अवसर प्रदान किये जाने से उनके व्यक्तित्व का संतुलित विकास हो सके। जिससे वह समाज में अपना योगदान दे सके। जिससे परिवार, समाज, राष्ट्र, एवं स्वयं के विकास की सम्भावनायें बढ़ जाती है। शिक्षकों एवं अभिभावकों द्वारा निर्देशन व परामर्श देकर दूर किया जा सकता है। इससे आदर्श समाज का निर्माण हो सकेगा।

वर्तमान समय की आवश्यकता है कि विद्यालयों में आधुनिकीकरण के विकास के लिये इससे सम्बन्धित गतिविधियों को शामिल किया जाय, शिक्षकों को इस सम्बन्ध में विशिष्ट प्रशिक्षण दिया जायें। अभिभावकों से उनके बालकों के विकास के लिये उनसे सहयोग लिया जायें तथा उन्हें प्रत्साहित व प्रशिक्षित किया जायें। समयऽ पर पर्यावरण प्रदूषण, स्वच्छता, संक्रमित बिमारियों, देशप्रेम, समाजिक सद्भाव एवं नवीन विचारों को लेकर नुक्कड़ नाटक, वाद-विवाद, निबन्ध प्रतियोगिता आदि का आयोजन कराया जाय जिससे बालकों में जागरूकता आयेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

आरजू, मोजम्मिल हसन (2009), भारतीय महिला एवं आधुनिकीकरण, प्रथम संस्करण, ISBN-81-7169-246-x, नई दिल्लीः कामनवेल्थ पब्लिशर्स।

इश्तियाक, एस (2002),स्लम इमप्रूवमेन्ट स्कीम्स इन कानपुर स्लमस एन एप्रैजल। Retrieved from URL: http// hdl.handle.net/10603/57764. 29.12.2015A

गुप्ता, एस0 पी0 एवं गुप्ता, अल्का (2014), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबादः शारदापुस्तकभवन।

गोरे, डा0 रश्मि, सिहं अम्बिका (जनवरी 2017), मलिन बस्ती में पर्यावरण प्रदूषण: चुनौतियां एवं सुझाव, शोध पत्रिका भारतीय आधुनिक शिक्षाए वर्ष 37, अंक 3, ISSN 0972-5636 P.P. 50-58.

सिंह, प्रेम, गाडविन, जे एवं फिलिप, शीना (2014), इमप्रूविंग लिविग कन्डीशंस इन स्लम्स डवैलर्स। Retrieved from www. iosr journals.org.

पाठक, पी0 डी0 (2010), शिक्षा मनोविज्ञान (बीसवां संस्करण), आगराः श्री विनोद पुस्तक मन्दिर।

पाठक, पी0 डी0 (2007-08), भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें, (बाइसवां संस्करण), आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन।

पाण्डेय, रामशकल (2002), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, इलाहाबाद।

मंगल, एस0 के0 एवं मंगल, शुभ्रा (2014), व्यवहारिक विज्ञानों में अनुसंधान विधियाँ, दिल्लीः पी0एच आई, प्राइवेट लिमिटेड, रिमझिम हाउस।

लाल, रमन बिहारी (2010-2011), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्वान्त, (सत्रवां संस्करण), मेरठः रस्तोगी पब्लिकेशन।

शर्मा, सुरेन्द्र कुमार (2007), नगरीय समाजशास्त्र के विविध आयाम, प्रथम संस्करण, ISBN-81-8356-261-2, नई दिल्लीः डिस्कवरी पब्लिशिग हाउस।

www.ignited.in

सिंह, अरूण कुमार (1998), मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा मे शोध विधियाँ, (तीसरा संस्करण), पटनाः मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।

सिहं, प्रदीप (22 दिसम्बर, 2013), इस शहर का क्या करे? जनसत्ता रविवारी, इण्डिया वाटर पोंटल (हिन्दी), Retrieved from www.india water portal/hindi.

सिहं, अम्बिका (अक्टूबर-दिसम्बर 2017), शिक्षा के सार्वभौमिकरण में समावेशी शिक्षा की भूमिकाः मलिन बस्ती के सन्दर्भ में, रिसर्च डिसकोर्स, एन इन्टरनेशनल रेफरीड रिसर्च जरनल, वर्ष VII] अंक XXV, ISSN 2277-2014, P.P. 84-86.

श्रीवास्तव, अरूण (2012) इण्डियाज अरबन स्लमसः राइजिंग सोशल इन इक्वेलिटीज, मास पावर्टी एण्ड होमलेसनेस। Retrieved from www.globalresearch.ca/india-s-rbanslumrising.

www.shodhganga.inflibnet.ac.in

www.sarhadepatrika.com

Corresponding Author

Smt. Ambika Singh*

Research Fellow, Education Department, Chatrapati Sahuji Maharaj University, Kanpur - 208024

sambika570@gmail.com